विचार बिन्दु

तर्क से किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुँचा जा सकता। मूर्ख लोग तर्क करते हैं, जबकि बुद्धिमान विचार करते हैं। –श्री परमहंस योगानंद

राज्य में एलएनजी गैस उपलब्धता की राह प्रशस्त

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के मार्गदर्शन व कुशल नेतृत्व में राजस्थान ने हरित उर्जा की सहज उपलब्धता के क्षेत्र में लिक्विफाईड नेचुरल गैस प्लांट की स्थापना की दिशा में कदम बढ़ाये हैं। हरित उर्जा को बढ़ावा देने की राज्य सरकार की प्रतिवद्धता को इसी से समझा जा सकता है कि पिछले दिनों ही राज्य सरकार ने प्रदेश की नई सीजीडी पॉलिसी जारी की है। इससे हरित उर्जा को बढ़ावा देने के लिए आधारभूत संरचना और घरों, उद्योगों व व्यावसायिक प्रतिष्ठानों तक डीपीएनजी और वाहनो के लिए सीएनजी की उपलब्धता सुनिश्चित हो सकेगी। इस कार्य में आने वाली बाधाओं को दूर करने और इस दिशा में तेजी से काम हो इसके लिए ही सीजीडी पालिसी जारी करने के साथ ही राज्य स्तर पर मुख्यसचिव स्तर पर और स्थानीय स्तर पर जिला कलक्टर की अध्यक्षता में मोनेटरिंग कमेटी बनाई गई है ताकि इस दिशा में तेजी काम हो और राजस्थान में सीएनजी डीपीएनजी की संरचना और कनेक्शन जारी हो सके।

इसी को एक कदम आगे बढ़ाते हुए राज्य के प्रमुख शासन सचिव खान एवं पेट्रालियम श्री टी. रविकान्त ने नए क्षेत्र तलाशने पर जोर दिया और राजस्थान गैस द्वारा गैल के सहयोग से नीमराना जो कि प्रमुख व्यावसायिक केन्द्र व दिल्ली एनसीआर से राजस्थान और अन्य प्रदेशों को जोड़ने वाला प्रमुख मार्ग है, वहां पर एलएनजी सुविधा उपलब्ध कराने की दिशा में कदम बढ़ाये हैं। राज्य में एलएनजी प्लांट लगने से एलएनजी वाहनों की भविष्य की ईंधन मांग को राज्य से ही पूरा किया जा सकेगा। इस रुट से आने वाले माल वाहनों और माइनिंग सेक्टर के वाहनों की ईंधन की जरुरत इस एलएनजी ईंधन से भी हो सकेगी। नीमराना रीको एरिया में भूमि पूजन किये गये परिसर में 56 किलो लीटर भण्डारण क्षमता के दो स्टोरेज टेंक के साथ ही एलएनजी उपलब्ध कराने के लिए डिस्पेंसर लगाये जाएंगे। इस पर लगभग 15 करोड़ रु. की लागत आयेगी। इससे डीजल के स्थान पर इको फ्रेंडली ईंधन की उपलब्धता के साथ ही सस्ता ईंधन उपलब्ध हो सकेगा। लंबी दूरी के वाहनों के लिए लिक्विफाईड नेचुरल गैस सस्ती होने के साथ ही ग्रीन एनर्जी को बढ़ावा मिलेगा। आरपीसीएल और गैल गैस के संयुक्त उपक्रम राजस्थान स्टेट गैस द्वारा एलएनजी स्टेशन की स्थापना अग्रणी कदम माना जाना चाहिए।

दरअसल लिक्विफाईड नेचुरल गैस प्राकृतिक गैस का ही एक रुप है। इसमें प्राकृतिक गैस को द्रवीकृत या कहें कि तरलीकृत अवस्था में तैयार किया जाता है। प्राकृतिक गैस को करीब 162 डिग्री ठंडा किया जाता है इससे एलएनजी तरलीकृत अवस्था में आ जाती है और अधिक ईंधन क्षमता होने से लंबी दूरी के वाहनों या इसी तरह के औद्योगिक प्रयोजनों के लिए भण्डारित करने और अधिक दूरी तक उपयाग करने में सहायक होती है। तरलीकृत होने से कम मात्रा में अधिक उर्जा भण्डारित की जा सकती है और इससे लंबी दूरी के परिवहन वाहनों को एलएनजी के कारण अधिक ईंधन भंडारित करने की आवश्यकता नहीं होती।

दरअसल लिक्विफाईड नेचुरल गैस प्राकृतिक गैस का ही एक रुप है। इसमें प्राकृतिक गैस को द्रवीकृत या कहें कि तरलीकृत अवस्था में तैयार किया जाता है। प्राकृतिक गैस को करीब 162 डिग्री ठंडा किया जाता है इससे एलएनजी तरलीकृत अवस्था में आ जाती है और अधिक ईंधन क्षमता होने से लंबी दूरी के वाहनों या इसी तरह के औद्योगिक प्रयोजनों के लिए भण्डारित करने और अधिक दूरी तक उपयाग करने में सहायक होती है। तरलीकृत होने से कम मात्रा में अधिक उर्जा भण्डारित की जा सकती है और इससे लंबी दूरी के परिवहन वाहनों को एलएनजी के कारण अधिक ईंधन भंडारित करने की आवश्यकता नहीं होती। यही कारण है जहाजों आदि में भी इसका उपयोग होता है। अमेरिका आज सबसे अधिक एलएनजी उत्पादनकर्ता देश है। जहां तक राजस्थान की बात है तो राजस्थान में अजमेर में इन्द्रप्रस्थ गैस और भीलवाड़ा में अल्ट्रा गैस द्वारा एलएनजी उपलब्ध कराना आरंभ कर दिया गया है।

राजस्थान स्टेट गैस और गैल द्वारा नीमराना में एलएनजी प्लांट की स्थापना के साथ ही भारी वाहन चालकों और इनके एसोसिएशन के प्रतिनिधियों को एलएनजी के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए अभी से ही जागरुकता कार्यक्रमों का संचालन भी आरंभ कर दिया है और इस कड़ी में 12 अगस्त नीमराना में आयोजित अवेयरनेस कार्यक्रम में एलएनजी के उपयोग और उपादेयता के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई है। तरलीकृत प्राकृतिक गैस सस्ता, टिकाउ, आर्थिक और पर्यावरणीय दृष्टि से बेहतर विकल्प है। जीवाश्म ईंधन की तुलना में हरित उर्जा का यह स्वच्छ विकल्प है। लंबी दूरी के परिवहन के लिए एलएनजी सर्वाधिक उपादेय है। गैल इण्डिया और आरएसजीएल द्वारा नीमराना में एलएनजी स्टेशन की स्थापना ट्रांसपोर्टरों को बेहतर सुविधा उपलब्ध कराना है। साझाकरण जागरुकता कार्यक्रम का आयोजन भी सरकार की हरित उर्जा को बढ़ावा देने और परिवहन ईंधन के रुप में एलएनजी के आर्थिक और पर्यावरणीय दृष्टि से भी लाभकारी होने की जानकारी पहुंचाने के लिए किया गया है। ट्रकों सहित लंबी दूरी के भारी परिवहन साधनों के लिए एलएनजी तकनीक और इसके लाभ खासतौर से कम लागत, कम उत्सर्जन और परिचालन दक्षता के लिए एलएनजी बेहतर विकल्प है। राजस्थान स्टेट गैस के प्रबंध निदेशक श्री रणवीर सिंह के अनुसार नीमराना में एलएनजी की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए एलएनजी स्टेशन की स्थापना का काम शुरु कर दिया गया है। स्वच्छ उर्जा के क्षेत्र में मुख्यमंत्री श्री भजन लाल शर्मा की पहल और खान व पेट्रोलियम प्रमुख सचिव श्री टी. रविकान्त के मार्गदर्शन में आरएसजीएल द्वारा पहले एनएनजी प्लांट की स्थापना इस दिशा में प्रदेश का बढ़ता कदम माना जाना चाहिए।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ.राजेन्द्र प्रसाद शर्मा
(वरिष्ठ लेखक)

राशिफल गुरूवार 28 अगस्त, 2025

पंडित अनिल शर्मा

भाद्रपद मास, शुक्ल पक्ष, पंचमी तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2082, चित्रा नक्षत्र प्रातः 8:44 तक, शुक्ल योग दिन 1:18 तक, बालव करण सायं 5:57 तक, चन्द्रमा आज तुला राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य–सिंह, चन्द्रमा–तुला, मंगल–कन्या, बुध–कर्क, गुरू–मिथुन, शुक्र–कर्क, शनि–मीन, राहु–कुम्भ, केतु–सिंह राशि में।

आज रवियोग प्रातः 8:44 से आरम्भ होगा। आज ऋषि पंचमी, भाई पाँच, जैन संवत्सरी पक्ष है। आज रक्षा पंचमी, ऋषि गर्ग अंगिरा जयन्ती है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 7:43 तक, चर 10:53 से 12:28 तक, लाभ–अमृत 12:28 से 3:58 तक, शुभ 5:13 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 6:08, सूर्यास्त 6:48

मेष
परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

सिंह
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। मित्रों/रिश्तेदारों से चल रहे मतभेद दूर होने लगेंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

धनु
आर्थिक/वित्तीय मामलों में संतुलन बना रहेगा। संभावित धन प्राप्त हो सकता है। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

वृष
परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

कन्या
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

मकर
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित परेशानियां दूर होने लगेगी। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

तुला
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

कुंभ
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। घर–परिवार में शुभ–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

कर्क
घर–परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में सुख–सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी।

वृश्चिक
घर–गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

मीन
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा में परेशानी हो सकती है।

बौद्धिक स्वतंत्रता: गरीबी से परे शोषण का यथार्थ

डॉ सुरेंद्रसिंह शेखावत

आज के युग में गरीबी के विरुद्ध संघर्ष और आर्थिक स्वतंत्रता की बातें समाज में प्रमुखता से उठाई जाती हैं। लोग सामाजिक स्वतंत्रता, प्रगतिशीलता और पिछड़ेपन से मुक्ति की वकालत करते हैं, लेकिन एक महत्वपूर्ण पहलू जो अक्सर अनदेखा रह जाता है, वह है बौद्धिक स्वतंत्रता और मानसिक गुलामी से मुक्ति। यह एक ऐसी गहरी सच्चाई है जिसे समाज के प्रभुत्वशाली वर्ग, जिन्होंने अपनी व्यावसायिक बुद्धि (commercial intelligence) के बल पर शासन तंत्र, प्रचार तंत्र, धर्म तंत्र, और अर्थ तंत्र पर नियंत्रण स्थापित कर लिया है, जानबूझकर दबाए रखते हैं। जबकि, वास्तविकता में शोषण की असली शक्ति धन में नहीं, बल्कि बुद्धि में निहित है और मानसिक गुलामी ही वह जंजीर है जो समाज को सच्ची प्रगति से वंचित रखती है। वास्तव में आर्थिक गरीबी केवल एक लक्षण है, जबकि इसका मूल कारण मानसिक और बौद्धिक दासता है।

गरीबी: एक सतही दृष्टिकोण

गरीबी को अक्सर केवल आर्थिक संकट के रूप में देखा जाता है। भोजन, आवास, और मूलभूत सुविधाओं की कमी को गरीबी का पर्याय माना जाता है। यह धारणा समाज में इतनी प्रबल है कि लोग मानते हैं कि आर्थिक संसाधनों का समान वितरण और रोजगार के अवसर प्रदान करना ही गरीबी का एकमात्र समाधान है। हालाँकि, यह दृष्टिकोण सतही है। यह हमें समस्या की जड़ तक पहुँचने से रोकता है।

एक व्यक्ति के पास धन की कमी हो सकती है, लेकिन यदि वह बौद्धिक रूप से स्वतंत्र है, तो उसके पास अपनी स्थिति को सुधारने की शक्ति होती है। इसके विपरीत, एक व्यक्ति जो आर्थिक रूप से संपन्न है, वह भी मानसिक गुलामी का शिकार हो सकता है, जहाँ उसकी सोच और निर्णय लेने की क्षमता दूसरों द्वारा नियंत्रित की जाती है। यह मानसिक गुलामी उसे अपनी शक्ति और स्थिति का सही उपयोग करने से रोकती है।

बौद्धिक स्वतंत्रता की अनदेखी

बौद्धिक स्वतंत्रता का अर्थ है व्यक्ति की वह क्षमता जो उसे स्वतंत्र रूप से सोचने, विश्लेषण करने और अपने निर्णय लेने में सक्षम बनाती है। यह स्वतंत्रता न केवल व्यक्तिगत विकास के लिए आवश्यक है, बल्कि सामाजिक प्रगति का आधार भी है। दुर्भाग्यवश, समाज के शक्तिशाली वर्गों ने इस स्वतंत्रता को व्यवस्थित रूप से दबाने का काम किया है। शासन तंत्र, धर्म तंत्र और प्रचार तंत्र जैसे संस्थानों ने लोगों की सोच को नियंत्रित करने के लिए विभिन्न उपाय अपनाए हैं।

शिक्षा प्रणाली, जो बौद्धिक स्वतंत्रता का स्त्रोत होनी चाहिए, अक्सर केवल आज्ञाकारी और अनुशासित श्रमिक तैयार करने का साधन बनकर रह गई है। यह प्रणाली हमें 'क्या सोचना है' सिखाती है, न कि 'कैसे सोचना है'। यह रटने पर जोर देती है, आलोचनात्मक और तार्किक सोच को प्रोत्साहित नहीं करती। इसका परिणाम यह होता है कि व्यक्ति ज्ञान प्राप्त तो करता है, लेकिन वह उस ज्ञान का उपयोग स्वतंत्र रूप से विश्लेषण करने और प्रश्न पूछने के लिए नहीं कर पाता। वह केवल दिए गए निर्देशों का पालन करता है, जिससे वह अपनी बौद्धिक क्षमताओं का पूर्ण उपयोग नहीं कर पाता और मानसिक गुलामी के जाल में फँसता चला जाता है।

व्यावसायिक बुद्धि और शोषण का तंत्र

'व्यावसायिक बुद्धि' एक ऐसी मानसिकता है जो शक्तिशाली वर्गों द्वारा विकसित की गई है। यह बुद्धि केवल आर्थिक लाभ के लिए नहीं, बल्कि सामाजिक नियंत्रण के लिए भी उपयोग की जाती है। यह वर्ग समाज के विभिन्न तंत्रों–राजनीति, धर्म, मीडिया, और अर्थव्यवस्था–पर अपनी पकड़ बनाए रखता है।

प्रचार तंत्र: नए दौर में तकनीक से लैस मीडिया के माध्यम से यह तंत्र यह निर्धारित करता है कि लोग क्या सोचें, क्या विश्वास करें और क्या चाहें। यह लोगों को ऐसी जानकारी और विचार परोसता है जो प्रभुत्वशाली वर्ग के हितों के अनुरूप होते हैं। फेक न्यूज़, सनसनीखेज खबरें और भ्रामक विज्ञापन लोगों को भ्रमित करते हैं और उनकी स्वतंत्र सोच को कमजोर करते हैं।

धर्म तंत्र: धार्मिक आडम्बर और पाखंड को आध्यात्मिकता का आवरण पहनाकर लोगों की सोच को नियंत्रित किया जाता है। यहाँ धार्मिक अंधविश्वास और रूढ़िवादिता को बढ़ावा दिया जाता है, जो व्यक्ति को प्रश्न पूछने से रोकते हैं। धर्म तंत्र अक्सर यह सिखाता है कि व्यक्ति की स्थिति उसके कर्मों या भाग्य का परिणाम है, जिससे वह अपनी दुर्दशा के लिए किसी और को जिम्मेदार नहीं ठहराता और शोषण का चक्र जारी रहता है।

शासन और अर्थ तंत्र: ये तंत्र मिलकर संसाधनों का असमान वितरण सुनिश्चित करते हैं। वे ऐसी नीतियाँ और कानून बनाते हैं जो शक्तिशाली वर्गों को और अधिक शक्तिशाली बनाते हैं, जबकि गरीब और कमजोर वर्ग हाशिए पर धकेल दिए जाते हैं। यह आर्थिक असमानता मानसिक गुलामी को और गहरा करती है, क्योंकि गरीब व्यक्ति अपनी स्थिति को स्वीकार कर लेता है और परिवर्तन की आशा खो देता है।

मानसिक गुलामी: शोषण का असली हथियार

मानसिक गुलामी वह अवस्था है जिसमें व्यक्ति अपनी स्वतंत्र सोच खो देता है और दूसरों द्वारा थोपे गए विचारों को बिना प्रश्न किए स्वीकार करता है। यह गुलामी धन से कहीं अधिक खतरनाक है, क्योंकि यह व्यक्ति को अपनी स्थिति को समझने और उससे बाहर निकलने की क्षमता से वंचित कर देती है।

उदाहरण के लिए, एक गरीब व्यक्ति जो यह मानता है कि उसकी गरीबी उसका भाग्य है या किसी दैवीय व्यवस्था का परिणाम है, वह कभी भी अपनी स्थिति को बदलने का प्रयास नहीं करेगा। वह शोषण को स्वीकार कर लेता है और उसे अपने जीवन का हिस्सा मान लेता है। यह मानसिक गुलामी ही शोषण का असली हथियार है, जो व्यक्ति को आत्म–निर्भर और स्वतंत्र होने से रोकता है।

धन बनाम बुद्धि: शोषण की शक्ति

वास्तव में शोषण की शक्ति धन में नहीं बल्कि बुद्धि में निहित है। यह एक गहन सत्य है। धन एक साधन हो सकता है, लेकिन बुद्धि वह शक्ति है जो इस साधन का उपयोग कैसे करना है, यह तय करती है। इतिहास में ऐसे कई उदाहरण हैं जहाँ आर्थिक रूप से सक्षम व्यक्ति भी शोषण का शिकार बने, क्योंकि उनकी बौद्धिक स्वतंत्रता छीन ली गई थी।

शोषण का सबसे प्रभावी रूप वह है जहाँ शोषक को संघर्ष या बल का उपयोग नहीं करना पड़ता। जब व्यक्ति स्वयं अपनी दासता को स्वीकार कर लेता है, तो शोषण का तंत्र पूर्ण हो जाता है। यह तभी संभव है जब व्यक्ति की बौद्धिक स्वतंत्रता को नष्ट कर दिया जाए।

बौद्धिक स्वतंत्रता का मार्ग

बौद्धिक स्वतंत्रता को बढ़ावा देने के लिए समाज में गहरे और संरचनात्मक परिवर्तनों की आवश्यकता है। यह कोई आसान काम नहीं है, लेकिन यह असंभव भी नहीं है।

शिक्षा प्रणाली में सुधार: शिक्षा प्रणाली को रटने के बजाय तार्किक और आलोचनात्मक सोच को प्रोत्साहित करना चाहिए। यह छात्रों को प्रश्न पूछने, विश्लेषण करने और स्वतंत्र रूप से निर्णय लेने के लिए तैयार करेगा। हमें ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है जो हमें यह सिखाए कि कैसे अपने विचारों को विकसित करें, न कि कैसे दूसरों के विचारों को स्वीकार करें।

जागरूकता अभियान: लोगों को प्रचार तंत्र और धार्मिक अंधविश्वासों से मुक्त करने के लिए व्यापक जागरूकता अभियान चलाए जाने चाहिए। इन अभियानों को लोगों को यह समझने में मदद करनी चाहिए कि वे कैसे अपनी सोच को नियंत्रित होने से बचा सकते हैं और कैसे सही और गलत के बीच अंतर कर सकते हैं।

स्वतंत्र विचारकों को प्रोत्साहन: स्वतंत्र विचारकों और बुद्धिजीवियों को समाज में प्रोत्साहित करना होगा, ताकि वे लोगों को मानसिक गुलामी से मुक्त करने में मदद कर सकें। इन विचारकों की भूमिका केवल ज्ञान प्रदान करने तक सीमित नहीं है, बल्कि उन्हें लोगों को स्वयं सोचने के लिए प्रेरित करना होगा।

- डॉ सुरेंद्रसिंह शेखावत,
(लेखक स्वतंत्र चिंतक है)

"पैसे दो, सम्मान पाओ": आधुनिक पुरस्कार समारोहों का कड़वा सच।

अशोक कुमार

किसी भी सभ्य समाज में सम्मान और पुरस्कार की परंपरा का एक विशेष महत्व होता है। यह परंपरा उन व्यक्तियों को सम्मानित करने का एक माध्यम है जिन्होंने अपने क्षेत्र में असाधारण योगदान दिया हो, निस्वार्थ भाव से समाज की सेवा की हो, या अपनी कड़ी मेहनत और प्रतिभा से उत्कृष्टता के नए मानक स्थापित किए हों। ऐसे सम्मान न केवल उस व्यक्ति की उपलब्धि को मान्यता देते हैं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए एक प्रेरणा स्त्रोत का भी काम करते हैं। परंतु, आज के इस आधुनिक और भौतिकवादी युग में, विशेषकर भारत में, सम्मान समारोहों की इस पवित्र परंपरा का स्वरूप चिंताजनक रूप से बदल रहा है। जो आयोजन कभी सच्ची योग्यता और निस्वार्थ सेवा को सराहने के पवित्र मंच हुआ करते थे, वे अब एक सुसंगठित व्यवसाय मॉडल में तब्दील हो गए हैं, जिसका एकमात्र उद्देश्य मुनाफा कमाना है। यह नकारात्मक प्रवृत्ति शिक्षा, समाज सेवा, कला, साहित्य और यहां तक कि उद्यमिता जैसे क्षेत्रों में भी गहरी पैठ बना चुकी है !

यह समझने के लिए कि आज क्या गलत हो रहा है, हमें पहले यह याद करना होगा कि सम्मान का वास्तविक अर्थ क्या था। भारत सरकार द्वारा दिए जाने वाले पद्म पुरस्कार, साहित्य अकादमी पुरस्कार, या विभिन्न राज्यों द्वारा दिए जाने वाले प्रतिष्ठित सम्मानों को देखें। इन पुरस्कारों की चयन प्रक्रिया अत्यंत कठोर, पारदर्शी और कई स्तरों से होकर गुजरती है। एक विशेषज्ञ समिति महीनों तक नामांकनों का मूल्यांकन करती है, उम्मीदवारों के जीवन भर के काम की समीक्षा करती है, और तब जाकर किसी एक नाम पर मुहर लगती है। इन सम्मानों के लिए कभी कोई शुल्क नहीं लिया जाता। सम्मान पाने वाले व्यक्ति के लिए यह गर्व का क्षण होता है क्योंकि यह उसकी दशकों की मेहनत, त्याग और समर्पण का प्रतिफल है। असली सम्मान की पहचान उसकी साख, चयन प्रक्रिया की निष्पक्षता और उसे प्रदान करने वाली संस्था की प्रतिष्ठा से होती है, न कि समारोह की चकाचौंध से।

इसके ठीक विपरीत, आज एक नई संस्कृति ने जन्म लिया है – पे एंड गेट अवॉर्डेड (पैसा दो, पुरस्कार पाओ)। यह एक ऐसा मॉडल है जो पूरी तरह से व्यावसायिक हितों पर आधारित है। इन समारोहों के आयोजक बड़ी चालाकी से मानवीय मनोविज्ञान को समझते हैं – समाज में पहचान और प्रतिष्ठा पाने की इच्छा। वे इसी इच्छा का शोषण करते हैं।

इन समारोहों की सबसे बड़ी पहचान उनका भव्य आयोजन होता है। इन्हें अक्सर पांच सितारा होटलों, शानदार रिसॉर्ट्स या बड़े ऑडिटोरियम में आयोजित किया जाता है। माहौल को और प्रभावशाली बनाने के लिए, आयोजक अक्सर किसी बॉलीवुड अभिनेता, सेवानिवृत्त नौकरशाह, राजनेता या किसी अन्य प्रसिद्ध हस्ती को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित करते हैं। इन अतिथियों की उपस्थिति एक प्रकार से वैधता का भ्रम पैदा करती है। आम जनता और यहां तक कि पुरस्कार खरीदने वाले व्यक्ति को भी यह महसूस कराया जाता है कि वे एक बहुत ही प्रतिष्ठित और महत्वपूर्ण कार्यक्रम का हिस्सा हैं।

स्पष्ट व्यावसायिक मॉडल: इस पूरी चमक–दमक के पीछे एक छिपा हुआ, लेकिन स्पष्ट व्यावसायिक मॉडल काम करता है: सम्मान की प्रक्रिया एक मोटी नामांकन शुल्क के साथ शुरू होती है। यह शुल्क कुछ हजार रुपये से लेकर कई लाख रुपये तक हो सकता है। इसे प्रोसेसिंग फीस, एप्लीकेशन फीस या नॉमिनेशन चार्ज जैसे आकर्षक नाम दिए जाते हैं।

कॉर्पोरेट कंपनियाँ और व्यवसायी इन आयोजनों को प्रायोजित करते हैं। उन्हें यह विश्वास दिलाया जाता है कि ऐसे 'प्रतिष्ठित' समारोहों से जुड़कर उनकी ब्रांड वैल्यू बढ़ेगी। आयोजक अपनी स्मारिकाओं और बैनरों पर इन प्रायोजकों के लोगो लगाकर मोटी रकम वसूलते हैं।

कई मामलों में, पुरस्कार सीधे तौर पर बेचे जाते हैं। विजेताओं को अलग–अलग पैकेज दिए जाते हैं – एक बेसिक पैकेज जिसमें सिर्फ ट्रॉफी और सर्टिफिकेट होता है, और एक प्रीमियम पैकेज जिसमें मुख्य अतिथि के साथ फोटो, मीडिया कवरेज और वीआईपी सीटिंग जैसी सुविधाएँ शामिल होती हैं। इसके अलावा, समारोह में शामिल होने वाले मेहमानों और परिवार के सदस्यों के लिए भी प्रवेश शुल्क या महंगे टिकट बेचे जाते हैं।

इस प्रवृत्ति का सबसे विनाशकारी प्रभाव समाज के नैतिक ताने–बाने पर पड़ रहा है। यह वास्तविक योग्यता और कड़ी मेहनत का घोर अवमूल्यन है। जब कोई व्यक्ति अपनी प्रतिभा और परिश्रम से नहीं, बल्कि अपनी वित्तीय क्षमता के बल पर पुरस्कार खरीद सकता है, तो समाज में सम्मान और नैतिकता का पैमाना ही नष्ट हो जाता है। इससे उन सच्चे शिक्षाविदों, समाजसेवियों, कलाकारों और वैज्ञानिकों का मनोबल टूटता है जो चुपचाप और निस्वार्थ भाव से अपना जीवन समाज की भलाई में लगा देते हैं, लेकिन उनके पास ऐसे पुरस्कार खरीदने के लिए न तो पैसा होता है और न ही इच्छा।

सम्मान समारोहों का मूल उद्देश्य, जो योग्यता को पहचान दिलाना था, अब पूरी तरह से पैसे कमाने के एक साधन में बदल गया है। यहाँ सम्मान एक उत्पाद है और महत्वाकांक्षी व्यक्ति एक ग्राहक।

आम जनता इन दिखावटी समारोहों और मीडिया कवरेज से आसानी से भ्रमित हो जाती है। वे यह मान लेते हैं कि पुरस्कार प्राप्त करने वाला व्यक्ति वास्तव में अपने क्षेत्र का विशेषज्ञ या महान योगदानकर्ता है। यह एक खतरनाक स्थिति है क्योंकि इससे अयोग्य लोग भी समाज में विशेषज्ञ के रूप में स्थापित हो जाते हैं।

यह प्रवृत्ति युवा पीढ़ी को एक गलत संदेश देती है – कि सफलता और सम्मान खरीदे जा सकते हैं और कड़ी मेहनत का कोई विकल्प मौजूद है। यह उन्हें ईमानदारी और परिश्रम के मार्ग से विचलित कर सकता है।

इस समस्या को खत्म करने के लिए एक बहुआयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता है।सबसे पहला और सबसे महत्वपूर्ण कदम जनता के बीच जागरूकता फैलाना है। लोगों को यह शिक्षित करना होगा कि असली सम्मान कभी खरीदा नहीं जा सकता। उन्हें यह समझना होगा कि किसी भी पुरस्कार की विश्वसनीयता उसकी चयन प्रक्रिया और प्रदान करने वाली संस्था की पृष्ठभूमि पर निर्भर करती

समाज के प्रबुद्ध वर्ग, मीडिया और सच्चे पेशेवरों को ऐसे पुरस्कार की दुकानों का सामूहिक रूप से बहिष्कार करना चाहिए। जब इन आयोजनों को सामाजिक और व्यावसायिक वैधता मिलनी बंद हो जाएगी, तो वे स्वतः ही समाप्त हो जाएंगे।

–अशोक कुमार,
पूर्व कुलपति, कानपुर एवं गोरखपुर विश्वविद्यालय; पूर्व विभागाध्यक्ष, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

सामाजिक सरोकार और परिवारों का मिलन। कहां से चले हम और कहां पहुंच गए, अंत क्या होगा पता नहीं !

जीवन में अपने से जुड़े लोगों से मिलते–जुलते समय हमारा दिखावा करना या अत्याधिक अपने आप के व्यवहार में सम्पन्नता दिखाना – यह सब कुछ समय के लिए आपको धनी व सुखी इंसान होने का संकेत तो दे सकता है, लेकिन समय के साथ वास्तविकता को हम छुपा नहीं सकते। हम अपने आप को दिखावा और ढोंग के माध्यम से मानसिक तनाव के रूप में परेशानी महसूस करने लग जाते हैं।

दिखावे व बराबरी की होड़ हमें आर्थिक रूप से कमजोर ही बनाती है क्योंकि बराबरी करने के लिए हमें अपनी हैसियत व कमाई से अधिक खर्च करना पड़ता है। इससे हम कर्ज का बोझ अपने कंधों पर बेवजह उठाते हुए अपने जीवन को दुखी कर लेते हैं।

जीवन में कभी भी औरों से अधिक धनवान दिखाने में सिवाय नुकसान के कुछ भी प्राप्त नहीं होता।

अगर अपने को सुखी रखना है तो जो पास है उसमें संतोष व आनंद लेना चाहिए और यह भूल जाना चाहिए कि लोग क्या सोचेंगे।

क्योंकि अंत में व्यवस्था स्वयं की ही काम आती है। दिखावे से प्रभावित रिश्ते जीवन में कभी साथ नहीं देते। हमारे सांसारिक जीवन में मेल–जोल का अवसर शादी–विवाह, सम्मेलन, घर में कुआं पूजन, पुत्र उत्सव या पुत्री उत्सव जैसे कार्यक्रमों में हुआ करता था। उन्हीं अवसरों पर सारे रिश्तेदार–नातेदारों से मुलाकात होती थी। लेकिन आजकल वह परंपरा भी खत्म होती जा रही है। अब तो वहां भी चर्चा होती है कि कौन कितनी महंगी कार से आया है, कितने महंगे कपड़े पहन रखे हैं, कौन–सा मोबाइल फोन हाथ में है, कौन–सी परफ्यूम लगाई है, बच्चे किस बड़े स्कूल या कॉलेज में पढ़ रहे हैं, कौन देश में है या विदेश में, कितना पैकेज ले रहा है।

हम यह भूल गए कि पहले तीन–चार भाई या पांच भाई परिवारों में रहते थे और जब इकट्ठे होते थे तो भाई–बंधु और परिवार के सदस्य साथ आते थे। चाचा–मामा और रिश्तेदारों के बीच अपनापन झलकता था। मुलाकातें दिल से होती थीं, न कि अपनी कमाई का दिखावा करने के लिए पहले शादियां मोहल्ले या धर्मशाला में होती थीं। मेहमान आसपास के घरों में ठहरते थे। सब साथ बैठकर पत्तल–दोने में भोजन करते थे। गद्दे–रजाई बिछा दिए जाते थे और साधारण व्यवस्था में भी अपनापन झलकता था लेकिन अब हालात पूरी तरह बदल गए हैं। आजकल शादियां महंगे रिसॉर्ट्स और डेस्टिनेशन वेडिंग्स में होने लगी हैं। शादी से दो दिन पहले ही पूरा परिवार रिसॉर्ट में शिफ्ट हो जाता है और मेहमान सीधे वहीं पहुंचते हैं। जिसके पास चारपहिया वाहन है वही वहां तक पहुंच सकता है, दोपहिया वालों के लिए यह संभव नहीं। किसी को केवल लेडीज़ संगीत में बुलाना, किसी को सिर्फ रिसेप्शन में, किसी को कॉकटेल पार्टी में, और परिवार को सभी कार्यक्रमों में। इस निमंत्रण में अपनापन की भावना खत्म हो चुकी है। सिर्फ मतलब के व्यक्तियों को या परिवारों को आमंत्रित किया जाता है। कई बार देखा गया है कि जो लोग बारात में शामिल होने के लिए आते हैं उन्हें दूल्हा–दुल्हन का नाम या शकल मालूम ही नहीं होती और भविष्य में कभी दूल्हा–दुल्हन मिल जाए तो उन्हें पहचानते भी नहीं है। महिला संगीत के लिए महंगे कोरियोग्राफर बुलाए जाते हैं। मेहंदी में सबको हरे कपड़े पहनने की अनिवार्यता होती है, हल्दी में पीले कुर्ते–पायजामे। जो न पहने, उसे हीन दृष्टि से देखा जाता है। इवेंट मैनेजमेंट वालों ने शादी की परंपरा को एक प्रदर्शनी में बदल दिया है। दूल्हा–दुल्हन पर से ध्यान हटकर सजावट, डांसर्स, परफॉर्मेंस और दिखावे पर चला जाता है। 10–15 लोग आ रहे हैं अधनंगे कपड़ों में डांस करने, कोई झंडा उठा रहा है, कोई बैनर उठा रहा है, कोई टोपी पहन रहा है, कोई फूल उछाल रहा है, कोई पता नहीं वह गरीब विचित्रता के मानवता के सबूत पेश किए जाते हैं कि हां हम बहुत पैसे वाले हैं और हम इस खर्च का वहन कर सकते हैं। वह खुद भूल जाते हैं, लड़के और लड़की, वर और वधू पक्ष में दोनों लोग कि वह अपने बेटे–बेटी की शादी करने आए हैं और उनका भविष्य/जीवन जो है वह पूजा–पाठ के सहारे चलेगा, भगवान के सहारे चलेगा, इन इवेंट वालों के सहारे नहीं चलेगा लेकिन उन दोनों पक्षकारों का पूरा ध्यान जो होता है वह इवेंट की बारीकियों पर होता है कि उसने पैर कैसा रखना है, उसने हाथ कैसे रखना है, उसने कंधे पर क्या करना है, ऐसा किया कि नहीं किया, नहीं किया तो इवेंट वाले का पैसा काट दो फोटोग्राफर्स और वीडियोग्राफर्स 6–8 कैमरे लगाकर ऐसे–ऐसे एंगल से तस्वीरें खींचते हैं जिनका कोई मतलब नहीं होता। सैकडों डेटा इकट्ठा होता है जिसे कोई देखने की जहमत तक नहीं उठाता। लेकिन खर्चा लाखों में हो जाता है। इसके बाद रिसेप्शन स्टार्ट होता है। स्टेज पर वरमाला अब फिल्मी स्टाइल में होती है।

पहले लड़की और लड़के वाले मिलकर हंसी–मजाक करके वरमाला करवाते थे। आजकल स्टेज पर धुंए की धूनी छोड़ देते हैं। दूल्हा–दुल्हन को अकेले छोड़ दिया जाता है, बाकी सब को दूर भगा दिया जाता है

- रोटेरियन सुनील दत्त गोयल
महानिदेशक, इम्पीरियल चैंबर ऑफ़ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री
पूर्व उपाध्यक्ष, जयपुर स्टॉक